कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

BSKE–141

स्नातक कला उपाधि कार्यक्रम (बी.ए.जी.) संस्कृत

सत्रांत परीक्षा

जून, 2024

बी.एस.के.ई.–141 : आयुर्वेद के मूल आधार

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *यह प्रश्न-पत्र कुल* ***दो*** *खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं। खण्डों में दिये गये निर्देशानुसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

खण्ड—अ

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***पाँच*** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 5×15=75

(अ) आयुर्वेद के अनुसार रोगों के हेतु कौन-कौनसे हैं तथा इन हेतुओं का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(ब) शिशिर ऋतु के पथ्य और अपथ्य पर विस्तृत लेख लिखिए।

(स) आयुर्वेद अवतरण और प्रमुख आचार्य पर लेख लिखिए।

(द) प्रमुख उपनिषदों का परिचय देते हुए कठोपनिषद् पर लेख लिखिए।

(य) आयुर्वेद के अनुसार ऋतुकाल का विभाजन और वर्षा ऋतु के अपथ्य को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

(र) चरक संहिता (सूत्रस्थानम्) का सामान्य परिचय लिखिए।

खण्ड—ब

2. (अ) निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : 3×5=15

(i) षड्स का शरीर पर प्रभाव

(ii) उपनिषद् शब्द का अर्थ और प्रतिपाद्य विषय

(iii) भृगुवल्ली

(iv) मुण्डकोपनिषद्

(ब) निम्नलिखित में से किसी **एक** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10

प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात्। प्राणाद्धयेव खल्विमानिभूतानि जायन्ते। प्राणेन जातानि जीवन्ति। प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितरमुपससार। अधीहि। भगवो ब्रह्मति। तं होवाच। तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।

अथवा

भृगुर्वे वारूणिः वरुण पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मति। तस्मात्सप्रोवास। अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति। तं होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति। यन्प्रयन्त्यभिसांविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा।